MAKTABATUL MADINA INDIA

Ibadate Ramazan Kaise Qubool Hon? (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 448
Weekly Booklet : 448

अमीरे अहले सुन्नत का बयान

# इ़बादाते रमज़ान कैसे क़ुबूल हों ?

सफ़ह़ात : 14

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

# इ़बादाते रमज़ान कैसे क़ुबूल हों ? (1)

**दुआए अ़त्तार :** या रब्बे करीम ! जो कोई 13 सफ़हात का रिसाला "इ़बादाते रमज़ान कैसे क़ुबूल हों ?" पढ़ या सुन ले उसे माहे रमज़ान की बरकतों और इ़बादतों की लज़्ज़तों से मालामाल फ़रमा और उस को वालिदैन और ख़ानदान समेत बे हिसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : क़ियामत के दिन अल्लाह पाक के अ़र्श के साए के इ़लावा कोई साया न होगा, तीन त़रह़ के अफ़राद उस दिन अल्लाह पाक के अ़र्श के साए में होंगे। ﴿1﴾ वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे। ﴿2﴾ जो मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करे और ﴿3﴾ जो मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़े। (البدور السافرۃ للسیوطی، ص131، حدیث:366)

वोह सलामत रहा क़ियामत में पढ़ लिये जिस ने दिल से चार सलाम
मेरे प्यारे पे मेरे आक़ा पर मेरी जानिब से लाख बार सलाम
मेरी बिगड़ी बनाने वाले पर भेज ऐ मेरे किरदिगार सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

**ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान !** कुछ दिन पहले ही की तो बात है कि माहे रमज़ानुल मुबारक के आने का पुरकैफ़ शोर उठा था मगर आह ! देखते ही देखते रमज़ानुल मुबारक का रह़मतों भरा, प्यारा प्यारा महीना तशरीफ़ ले गया, अल्लाह पाक हमें इस माहे मुबारक की ह़क़ीक़ी मह़ब्बत नसीब फ़रमाए और इस मुबारक

1 .... अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का 8 शव्वाल शरीफ़ 1441 हिजरी को मदनी मुज़ाकरे से पहले होने वाला सुन्नतों भरा बयान।

महीने में हम से जो टूटी फूटी इ़बादात हुई उन्हें अपनी रह़मत से क़ुबूल करे और इ़बादत में होने वाली कोताहियों को मुआ़फ़ फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

## आह ! तड़पा के रमज़ां चला है

**ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** रमज़ानुल मुबारक की बरकतों के भी क्या कहने ! इस माहे मुक़द्दस की आमद से पहले ही घरों में तय्यारियां शुरूअ़ हो जाती हैं, इस मुबारक महीने का एक अपना ही मज़ा और सुरूर होता है जो दीगर अय्याम में नहीं पाया जाता, जैसे ही रमज़ानुल मुबारक का चांद नज़र आता है तो दिल पर एक अ़जीब कैफ़िय्यत त़ारी हो जाती है जिस के सबब इन्सान ख़ुद ही इ़बादत की त़रफ़ माइल हो जाता और मस्जिद में आने लग जाता है और फिर जैसे ही ईद का चांद नज़र आता है तो रमज़ानुल मुबारक के आ़शिक़ का दिल ग़म में डूब जाता है, मस्जिदें ख़ाली हो जाती हैं, दीन का दर्द रखने वाले को मस्जिदों की वीरानी तड़पा कर रख देती है, गोया रमज़ानुल मुबारक के जाने पर फ़ज़ाएं भी ग़मगीन और हवाएं भी सौगवार हो जाती हैं। येह हर किसी की अपनी Feelings यानी जज़्बात होते हैं, किसी को ग़म ज़ियादा होता है तो उस को बिल्कुल चैन नहीं आता जैसे किसी क़रीबी अ़ज़ीज़ का इन्तिक़ाल हो जाए तो चैन नहीं आता, ऐसी ही Feelings बाज़ ख़ुशनसीबों की रमज़ानुल मुबारक की रुख़्सती पर होती हैं कि हाय अफ़सोस ! रमज़ान का बा बरकत और निहायत अ़ज़मतो शान वाला महीना हम से रुख़्सत हो गया, वोह सब कुछ चला गया जो रमज़ान की वज्ह से हमें नसीब हुवा था।

मसर्रत से सीना मदीना बना था — मज़ा ख़ूब रमज़ान में आ रहा था
परे रंजो ग़म का अन्धेरा हुवा था — मज़ा ख़ूब रमज़ान में आ रहा था
ख़बर जब कि रमज़ां की आमद की आई — तो मुरझाए दिल की कली मुस्कुराई

क्या अब्रे करम नूर बरसा रहा था मज़ा ख़ूब रमज़ान में आ रहा था
तराने ख़ुशी के फ़ज़ा गुनगुनाती हवा भी मसर्रत के नग़मे सुनाती
जिधर देखिये मरहबा मरहबा था मज़ा ख़ूब रमज़ान में आ रहा था
मुझे माहे रमज़ां का ग़म दे इलाही मिटा हुब्बे दुनिया की दिल से सियाही
मज़ा फ़ानी सन्सार में क्या रखा था मज़ा ख़ूब रमज़ान में आ रहा था

(वसाइले बख़्शिश, स. 621)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## रमज़ानुल मुबारक की याद का अनोखा अन्दाज़

पहले के लोग रमज़ानुल मुबारक को यूं याद रखते कि रमज़ान शरीफ़ से 6 महीने (Six months) पहले अल्लाह पाक से रमज़ान शरीफ़ को पाने की दुआ़एं मांगते रहते और फिर रमज़ान शरीफ़ के तशरीफ़ ले जाने के बाद छे माह तक इस माहे मुबारक में की जाने वाली इ़बादत की क़ुबूलिय्यत की दुआ़एं करते रहते।

(لطائف المعارف، ص240)

اَلْحَمْدُلِلّٰه ! हमें भी सारा साल रमज़ानुल मुबारक का इन्तिज़ार रहता है बल्कि बाज़ ख़ुशनसीब तो सारा साल येह दुआ़ मांगते हैं "اَللّٰهُمَّ بَلِّغْنَا رَمَضَانَ بِصِحَّةٍ وَّعَافِيَةٍ यानी ऐ अल्लाह पाक ! हमें सेह़त व आ़फ़ियत के साथ माहे रमज़ान से मिला दे।"

اٰمِين بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلّى اللّٰه عليه واٰله وسلّم

## रमज़ानुल करीम से अमीरे अहले सुन्नत का इज़हारे मह़ब्बत

اَلْحَمْدُلِلّٰه ! येह मुझ पर अल्लाह पाक की नेमत, अल्लाह पाक की रह़मत और अल्लाह पाक का करम है कि मुझे आज से नहीं बचपन से रमज़ान शरीफ़ से प्यार है, जब से होश संभाला है रमज़ान मुझे अच्छा लगता है। ख़ुदा की क़सम रमज़ान रह़मत का दरिया है, मैं इन्तिज़ार कर रहा था कि रमज़ान आ जाए, (जब

रमज़ान आया तो) अब मैं रह़मत के दरिया में आ गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! जान में जान आ गई। (मदनी मुज़ाकरा, पहली रमज़ानुल मुबारक 1446 हिजरी मुताबिक़ 2 मार्च 2025)

जब भी आता है रमज़ान जान में आ जाती है जान
ख़ूब है रमज़ां की भी शान इस में उतरा है क़ुरआन

## रमज़ानुल मुबारक को याद रखने के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े

ऐ काश ! अल्लाह पाक हमें ग़मे रमज़ान नसीब फ़रमाए, ऐसा करम हो जाए कि हम सारा साल ही रमज़ानुल मुबारक को याद रखें। इस के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े हो सकते हैं मसलन एक मख़्सूस डायरी बना कर रखें कि जिस में आमदे रमज़ान की तारीख़ और इस के रुख़्सत होने की तारीख़ लिखी जा सके, यूं ही इस डायरी में अपने वोह औरादो वज़ाइफ़ भी लिखते रहें जो आप रमज़ान शरीफ़ में पढ़ते हैं और बाद में उस डायरी को पढ़ कर रमज़ान की याद ताज़ा करते रहें, क्यूंकि रमज़ानुल मुबारक की कुछ न कुछ याद तो होनी चाहिये, मेरे बाएं हाथ की कलाई पर एक ज़ख़्म का निशान है जिसे मैं बसा औक़ात चूम भी लेता हूं, इस लिये कि मुझे येह ज़ख़्म 2015 के रमज़ानुल मुबारक में हुवा था। रमज़ान की याद देर तक बाक़ी रखने के लिये मेरा तजरिबा है कि इस मुबारक महीने के रुख़्सत होने के बाद जितना हो सके इन्सान अपनी ज़बान बन्द रख के उस पर ख़ामोशी का ताला लगा ले और रमज़ानुल मुबारक की फ़ज़ीलत को अपने ज़ेहन में याद कर के जहां बोलने की ज़रूरत हो सिर्फ़ वहीं बोले, इस त़रह़ करते रहने से आहिस्ता आहिस्ता रमज़ानुल मुबारक की याद में रोना भी नसीब हो जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه [1]

1.... रमज़ानुल करीम की याद दिल में बढ़ाने के लिये शोबा हफ़्तावार रसाइल की त़रफ़ से अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه रमज़ानुल मुबारक में लिखी जाने वाली कई तह़रीरात को रसाइल की शक्ल में यादे रमज़ान क़िस्त : 1, 2, और 3 के नाम से पेश किया गया है।

## ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत और रमज़ानुल करीम की याद

एक मरतबा मेरे बेटे (यानी ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत अलहाज उ़बैद रज़ा अ़त्तारी मदनी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی) ने बताया कि मेरी आ़दत है और इस साल भी (रमज़ानुल मुबारक की याद के लिये) मैं ने शाबान शरीफ़ के आख़िरी दिन ग़ुरूबे आफ़्ताब का वक़्त अपनी घड़ी में बतौरे "अलार्म" लगा दिया। रोज़ाना जब वोह बजता है तो मुझे रमज़ानुल मुबारक की याद दिलाता है, इसी त़रह़ जब सुब्ह़े बहारां का वक़्त आता है तब भी मैं ऐसा ही करता हूं।

## नफ़्ल रोज़ों की त़हरीक

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! रमज़ान शरीफ़ की याद को बाक़ी रखने के लिये दावते इस्लामी की मजलिसे इस्लाह़े आमाल की त़रफ़ से नफ़्ल रोज़ों की भी त़हरीक जारी है, जिस की तीन सूरतें (Categories) हैं : ﴿1﴾ "अय्यामे मन्हिय्या (यानी ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़्ह़ा, नीज़ 11, 12 और 13 ज़िल ह़ज) के इ़लावा पूरा साल रोज़े रखना।" ﴿2﴾ "सौमे दावूदी यानी एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखना या अपनी सहूलत के एतिबार से महीने में पन्दरह दिन रोज़े रखना", लेकिन सौमे दावूदी वाली फ़ज़ीलत तब ही मिलेगी जब कि एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखा जाए। सौमे दावूदी से मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक के नज़दीक सब से पसन्दीदा रोज़ा ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام का रोज़ा है (कि वोह एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन न रखते)। (بخاری، 1/385-3/417، حدیث:1131-5052) और ﴿3﴾ "हफ़्ते में कम अज़ कम एक रोज़ा रखना।" बहर ह़ाल पीर शरीफ़ का रोज़ा तो सब को रख लेना चाहिये कि येह सुन्नत है, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर पीर शरीफ़ का रोज़ा रखते थे, जब इस का सबब पूछा गया तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं इस दिन पैदा हुवा हूं।

(مسلم، ص455، حدیث:2747) इसी त़रह़ जुमेरात का रोज़ा भी सुन्नत है। अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पीर और जुमेरात को रोज़ा रखना पसन्द फ़रमाते थे, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : पीर और जुमेरात के दिन आमाल (अल्लाह पाक की बारगाह में) पेश होते हैं, मुझे येह पसन्द है कि जब मेरा अ़मल पेश हो तो उस वक़्त मैं रोज़े से हूं। (ترمذی، 2/186، 187، حدیث:745، 747)

तमाम आ़शिक़ाने रसूल को चाहिये कि रमज़ानुल करीम की याद को बाक़ी रखने के लिये नफ़्ली रोज़ों की आ़दत बनाएं। अल्लाह पाक ने चाहा तो इस से दीगर इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को भी तरग़ीब मिलेगी। اِنْ شَآءَاللّٰه

नज़र चांद रमज़ां का जिस वक़्त आया — हुवा रह़मतों का ज़माने पे साया
उफ़ुक़ पर भी अब्रे करम छा गया था — मज़ा ख़ूब रमज़ान में आ रहा था
मुझे माहे रमज़ां का ग़म दे इलाही — मिटा हुब्बे दुनिया की दिल से सियाही
मज़ा फ़ानी सन्सार में क्या रखा था — मज़ा ख़ूब रमज़ान में आ रहा था

(वसाइले बख़्शिश, स. 627)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

## रमज़ान के बाद भी इ़बादात जारी रखिये

**ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान !** आप को रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखना, तरावीह़ पढ़ना, क़ुरआने करीम की तिलावत करना, बहुत बहुत मुबारक हो, अल्लाह करीम इन इ़बादतों को आप की और आप के सदक़े मेरी बे ह़िसाब बख़्शिश का ज़रीआ़ बनाए। याद रखिये ! जिस ख़ुदाए अ़ज़ीम की आप ने माहे रमज़ानुल मुबारक में इ़बादत की है वोही ख़ुदाए रह़ीमो करीम सारे महीनों का भी ख़ालिक़ (यानी पैदा करने वाला) है, ऐ काश ! हम अपनी इ़बादात सिर्फ़ माहे रमज़ान तक मह़दूद रखने के बजाए सारा साल बल्कि सारी ही ज़िन्दगी अल्लाह

पाक और उस के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त में गुज़ारने की सआ़दत पाते।

## रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों की क़ुबूलिय्यत की अ़लामत

रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों के बाद (नफ़्ल) रोज़ों की आ़दत बनाना रमज़ान शरीफ़ के रोज़ों की क़ुबूलिय्यत की निशानी है। क्यूंकि अल्लाह करीम जब किसी बन्दे का नेक अ़मल क़ुबूल फ़रमाता है तो उसे इस नेकी के बाद (मज़ीद) नेक काम करने की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाता है जैसा कि बाज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया : नेकी का सवाब उस नेकी के बाद फिर नेकी (करना) है, लिहाज़ा जो नेक काम करे और उस के बाद फिर नेकी करे तो दूसरी नेकी पहली नेकी के क़ुबूल होने की अ़लामत है, जिस त़रह़ किसी ने नेक काम किया और उस के बाद फिर बुरा काम किया तो येह बुरा काम उस नेक काम के रद और उस के क़ुबूल न होने की अ़लामत है।

(لطائف المعارف، ص253)

## रमज़ान के बाद रोज़े

ह़ज़रते इमाम शाअ़बी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : रमज़ान के बाद एक रोज़ा रखना मुझे उ़म्र भर रोज़ा रखने से ज़ियादा पसन्द है। (لطائف المعارف، ص251) اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! कई आ़शिक़ाने रसूल रमज़ान शरीफ़ के गुज़रने के बाद शव्वाल शरीफ़ में भी रोज़े रखते हैं, शव्वाल शरीफ़ के रोज़ों की तो क्या ही बात है ! चुनान्चे तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पेशे ख़िदमत हैं : ﴿1﴾ "जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर छे दिन शव्वाल में रखे तो अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाएगा जैसे उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था।" (مجمع الزوائد، 3/425، حدیث:5102) ﴿2﴾ "जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर उन के बाद छे (6) दिन शव्वाल में रखे, तो ऐसा है जैसे दहर का (यानी

उम्र भर के लिये) रोज़ा रखा।" (مسلم، ص456، حدیث:1164) ﴿3﴾ "जिस ने ईदुल फ़ित्र के बाद (शव्वाल में) छे रोज़े रख लिये तो उस ने पूरे साल के रोज़े रखे कि जो एक नेकी लाएगा उसे दस मिलेंगी। तो माहे रमज़ान के रोज़े रखना दस महीने के रोज़ों के बराबर और इन छे दिनों के रोज़े (रखने का सवाब) दो महीने के बराबर तो येह पूरे साल के रोज़े हो गए।" (سنن کبریٰ للنسائی، 2/162، 163، حدیث:2860، 2861 ملخصاً) बेहतर येह है कि येह रोज़े मुतफ़र्रिक़ यानी जुदा जुदा रखे जाएं जैसे एक दिन छोड़ कर एक दिन रख लिया जाए या पूरे महीने में जिस त़रह़ आसानी हो और ईद के बाद लगातार छे दिन तक रख लिये तब भी ह़रज नहीं। बस सिर्फ़ ईद के दिन यानी शव्वाल की पहली तारीख़ को रोज़ा नहीं रख सकते।

## बेहतरीन नेकी और बदतरीन गुनाह

**ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** वोह नेकी कितनी अच्छी है जो बुराई में मुब्तला हो जाने के बाद की जाए कि वोह नेकी इस बुराई को मिटा देगी और इस से ज़ियादा बेहतर वोह नेकी है जो किसी नेकी के बाद की जाए और वोह गुनाह कितना बुरा है जो किसी नेकी के बाद किया गया जो कि उस नेकी को मिटा देता है। याद रखिये ! तौबा के बाद एक गुनाह करना तौबा से पहले किये जाने वाले सत्तर गुनाहों से ज़ियादा बुरा है। अल्लाह करीम से मौत तक नेकी पर साबित क़दमी की दुआ मांगते रहिये और उस से दिलों के उलट जाने और नेकी के बाद गुनाह की त़रफ़ पलट जाने से पनाह मांगिये ! यक़ीनन अल्लाह पाक की इ़ताअ़त की सआ़दत के बाद उस की ना फ़रमानी की ज़िल्लत बड़ी ख़राब शै है और क़नाअ़त (यानी जो मिल गया इस पर सब्र करने) की दौलत मिलने के बाद लालच की ग़रीबी में पड़ जाना बहुत ही बुरा है।

(لطائف المعارف، ص257 ملتقطاً)

## नौजवानों और बूढ़ों को नसीह़त

**ऐ नौजवानो !** अगर आप ने गुनाहों को छोड़ने पर सब्र कर लिया तो ख़्वाहिशे नफ़्स की लज़्ज़त को छोड़ने के बदले में ईमान की ह़लावत (यानी मिठास) आप के दिलों में रख दी जाएगी, क्यूंकि जिस ने किसी शै को अल्लाह पाक के लिये छोड़ दिया तो उसे उस से बेहतर शै अ़ता की जाती है। येह ख़िताब तो नौजवानों से है। रहा बूढ़ा शख़्स, तो वोह अगर रमज़ानुल मुबारक के तशरीफ़ ले जाने के बाद गुनाह का आ़दी हो जाए तो येह और भी ज़ियादा बुरी और क़बीह़ बात है क्यूंकि नौजवान को तो अपनी उ़म्र के आख़िर में तौबा की त़रफ़ आ जाने की कुछ न कुछ उम्मीद लगी होती है ह़ालांकि तौबा की उम्मीद पर गुनाह करना भी सख़्त ख़त़रे वाली बात है क्यूंकि मौत कभी जल्द और अचानक भी आ जाती है। जब कि बूढ़े शख़्स की सुवारी तो उम्मीदों के समुन्दर के साह़िल पर पहुंच चुकी होती है (यानी बूढ़ा शख़्स तो मौत के बिल्कुल क़रीब पहुंच चुका होता है और उस की त़रफ़ दोबारा जवानी ने भी पलट कर नहीं आना) तो फिर वोह किस उम्मीद पर है ? (لطائف المعارف، ص257 ملتقطاً)

हो गया तुझ से ख़ुदा नाराज़ अगर — क़ब्र सुन ले आग से जाएगी भर
उ़म्र में छूटी है गर कोई नमाज़ — जल्द अदा कर ले तू आ ग़फ़्लत से बाज़
छोड़ दे दाढ़ी मुंडाना है ह़राम — एक मुठ्ठी से घटाना है ह़राम
ख़ूब कर ज़िक्रे ख़ुदा व मुस्त़फ़ा — दिल मदीना याद से उन की बना
कर अ़ता या रब ग़मे शाहे उमम — भूल जाएं रंजो ग़म दुनिया के हम
ऐ मेरी बहनो ! सदा पर्दा करो — तुम गली कूचों में मत फिरती रहो
या इलाही नेक कर अ़त्तार को — बख़्श दे तू बख़्श दे बदकार को

(वसाइले बख़्शिश, स. 713, 714)

## बुरे लोग

ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्र ह़ाफ़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया गया : एक ऐसी क़ौम है जो सिर्फ़ रमज़ानुल मुबारक में अल्लाह पाक की इ़बादत करती और रिज़ाए इलाही पाने की कोशिश करती है (और रमज़ानुल मुबारक के इ़लावा ऐसा नहीं करती)। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : वोह क़ौम तो बहुत बुरी है जो येह समझती है कि अल्लाह पाक का ह़क़ सिर्फ़ रमज़ान शरीफ़ ही में है, बेशक नेक बन्दा तो वोह है जो सारा साल अल्लाह पाक की इ़बादत करता और उस की रिज़ा ह़ासिल करने की कोशिश में लगा रहता है। (لطائف المعارف، ص255)

## एक अहम मस्अला

"बहारे शरीअ़त" में है : कोई शख़्स सिर्फ़ रमज़ान में नमाज़ पढ़ता है बाद में नहीं पढ़ता और कहता येह है कि येही बहुत है या जितनी पढ़ी येही ज़ियादा है क्यूंकि रमज़ान में एक नमाज़ सत्तर नमाज़ के बराबर है ऐसा कहना कुफ़्र है इस लिये कि इस से नमाज़ की फ़र्ज़ियत का इन्कार मालूम होता है। (बहारे शरीअ़त, 2/464, हिस्सा : 9)

## रब्बानी बन शाबानी मत बन !

किसी ने ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से पूछा कि रजब अफ़्ज़ल है या शाबान ? आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उस शख़्स से फ़रमाया : तू रब्बानी बन शाबानी मत बन ! (यानी अपनी इ़बादत को किसी महीने के साथ ख़ास मत कर बल्कि हर महीने और हर दिन अपने रब की इ़बादतो इ़ताअ़त में मसरूफ़ रहा कर।)

(لطائف المعارف، ص255)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

## इ़बादत की तौफ़ीक़ मिलने पर शुक्र का त़रीक़ा

बाज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِم को जब अल्लाह पाक ने रात को इ़बादत करने की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाई तो उन्हों ने इस नेमत के शुक्र में दिन को रोज़ा रख लिया ताकि रात में की जाने वाली इ़बादत का शुक्र अदा हो जाए।

(لطائف المعارف،ص254)

याद रखिये ! वोह नेक आमाल जिन के सबब बन्दा रमज़ानुल मुबारक में अल्लाह पाक का क़ुर्ब (यानी नज़दीकी) ह़ासिल करता था, रमज़ान शरीफ़ गुज़रने के बाद उन नेक कामों को करने का वक़्त ख़त्म नहीं हो जाता बल्कि जब तक बन्दा ज़िन्दा है तब तक उन नेक कामों को करने का वक़्त उस के लिये बाक़ी (रहता) है।

(لطائف المعارف،ص255)

## क़ियामत में ह़सरत होगी

**ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** अल्लाह पाक से मह़ब्बत करने वाला नवाफ़िल के ज़रीए़ अपने मालिको मौला का क़ुर्ब (यानी नज़दीकी) पाने से नहीं उकताता, जिस बन्दे के औक़ात रब्बे काइनात की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी से ख़ाली हों बेशक उस ने नुक़्सान उठाया और जिस का कोई दिन अल्लाह करीम की याद से ग़फ़्लत में गुज़रा तो क़ियामत में वोह दिन उस की ह़सरत का बाइ़स होगा। हाय अफ़सोस उस पर जिस ने अल्लाह पाक की फ़रमां बरदारी के बग़ैर बहुत सा वक़्त ज़ाएअ़ कर दिया, हाय ह़सरत ! उस वक़्त पर जिस को उस शख़्स ने अल्लाह करीम के लिये किये जाने वाले नेक कामों के बग़ैर गुज़ार दिया। (لطائف المعارف،ص256ملخصًا)

हमारे बुज़ुर्गाने दीन रमज़ानुल मुबारक की इ़बादात को बहुत अहमिय्यत देते और इसे अपनी बख़्शिश का ज़रीआ़ समझते थे, चुनान्चे

## 80 रमज़ान के रोज़े

अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन साइब رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रहमान सुलमी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इन्तिक़ाल शरीफ़ के वक़्त उन के पास गए तो उन्हों ने फ़रमाया : यक़ीनन मैं अपने रब्बे करीम से उम्मीद लगाए हुए हूं, बेशक मैं ने उस की रिज़ा के लिये 80 रमज़ान रोज़े रखे हैं। (حلیۃ الاولیا، 4/213، رقم:5288) ग़ौर कीजिये कि आख़िरी वक़्त येह बुज़ुर्ग अल्लाह पाक की रह़मत को याद कर रहे थे और वैसे भी ह़दीसे क़ुदसी में अल्लाह पाक फ़रमाता है : "اَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِیْ بِیْ" यानी मैं अपने बन्दे के गुमान के क़रीब हूं। (مسند احمد، 5/421، حدیث:16016) ख़ास त़ौर पर आख़िरी वक़्त में तो अल्लाह पाक से अच्छी उम्मीद रखनी चाहिये। ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه लिखते हैं : अगर बन्दा मुआ़फ़ी की उम्मीद करता हुवा मर जाए तो اِنْ شَآءَاللهُ उसे मुआ़फ़ी ही मिलेगी। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/59)

अल्लाह पाक हमें भी इस बात की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए कि हमें भी इस से ह़ुस्ने ज़न की नेमत नसीब हो जाए। मगर आज कल बाज़ नादान येह कह देते हैं कि हम गुनहगार हैं, इस लिये हम तो जहन्नम में जाएंगे, ऐसों के लिये पूरा पूरा ख़त़रा है कि उन की बात पूरी हो जाए, इस लिये ऐसा हरगिज़ नहीं कहना चाहिये, مَعَاذَاللهُ ! कितने ही गुनाह किये हों अगर्चे गुनाह करने नहीं चाहियें लेकिन अगर हो गए हों तब भी अल्लाह पाक की रह़मत से नज़र नहीं हटानी चाहिये और कभी भी येह नहीं कहना चाहिये कि मुझे तो बस सज़ा ही मिलेगी, बल्कि अल्लाह पाक की रह़मत से अच्छी उम्मीद रखते हुए तौबा भी करनी चाहिये और जान बूझ कर गुनाह करना तो दूर की बात बल्कि गुनाह के क़रीब भी नहीं जाना चाहिये।

## अच्छी अच्छी निय्यतें फ़रमा लीजिये

**ऐ आशिक़ाने रसूल !** निय्यत फ़रमा लीजिये कि आज के बाद मेरी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी, अल्लाह पाक की ना फ़रमानी वाले कामों से बचेंगे, फ़िल्में ड्रामे नहीं देखेंगे, गाने बाजे नहीं सुनेंगे, दाढ़ी नहीं मुंडाएंगे और एक मुट्ठी से भी नहीं घटाएंगे, आशिक़ाने रसूल के साथ क़ाफ़िलों में हर माह तीन दिन सफ़र करेंगे, नेक आमाल के रिसाले के ज़रीए रोज़ाना अपने आमाल का जाइज़ा लेंगे और फिर हर अंग्रेज़ी महीने की पहली तारीख़ को वोह रिसाला अपने ज़िम्मेदार को जमा करवाएंगे। इस्लामी बहनें भी निय्यत करें कि हमेशा इस्लामी पर्दा करेंगी, अपनी ख़ुद साख़्ता मजबूरियां बयान नहीं करेंगी कि "हमारे ख़ानदान में तो कोई पर्दा नहीं करता, हमारे यहां तो यूं सख़्ती हैं, फ़ुलां मजबूरी है वग़ैरा।"

**इस्लामी बहनो !** पर्दे से बचने के लिये आज कल जो मजबूरियां बयान की जाती हैं वोह आख़िरत में काम नहीं आएंगी और न हीं अल्लाह पाक के अ़ज़ाब से बचा सकेंगी, अस्ल मजबूरी वोह है जो आख़िरत में अल्लाह पाक के अ़ज़ाब से बचा ले और अल्लाह करे कि ऐसी मजबूरी से आप को वासिता ही न पड़े और आप ख़ुश दिली के साथ अल्लाह पाक और उस के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करते हुए सारे अह़कामात बजा लाएं। याद रखिये ! पर्दा फ़र्ज़ है, इस के अह़काम की मालूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की 409 सफ़ह़ात की किताब "पर्दे के बारे में सुवाल जवाब" ज़रूर पढ़ लीजिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

# फ़ेहरिस्त


| उ़न्वान | सफ़ह़ा |
|---|---|
| दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत | 01 |
| आह ! तड़पा के रमज़ां चला है | 02 |
| रमज़ानुल मुबारक की याद का अनोखा अन्दाज़ | 03 |
| रमज़ानुल करीम से अमीरे अहले सुन्नत का इज़हारे मह़ब्बत | 03 |
| रमज़ानुल मुबारक को याद रखने के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े | 04 |
| ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत और रमज़ानुल करीम की याद | 05 |
| नफ़्ल रोज़ों की त़हरीक | 05 |
| रमज़ान के बाद भी इ़बादात जारी रखिये | 06 |
| रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों की क़ुबूलिय्यत की अ़लामत | 07 |
| रमज़ान के बाद रोज़े | 07 |
| बेहतरीन नेकी और बदतरीन गुनाह | 08 |
| नौजवानों और बूढ़ों को नसीह़त | 09 |
| बुरे लोग | 10 |
| एक अहम मस्अला | 10 |
| रब्बानी बन शाबानी मत बन ! | 10 |
| इ़बादत की तौफ़ीक़ मिलने पर शुक्र का त़रीक़ा | 11 |
| क़ियामत में ह़सरत होगी | 11 |
| 80 रमज़ान के रोज़े | 12 |
| अच्छी अच्छी निय्यतें फ़रमा लीजिये | 13 |

# अगले हफ़्ते का रिसाला

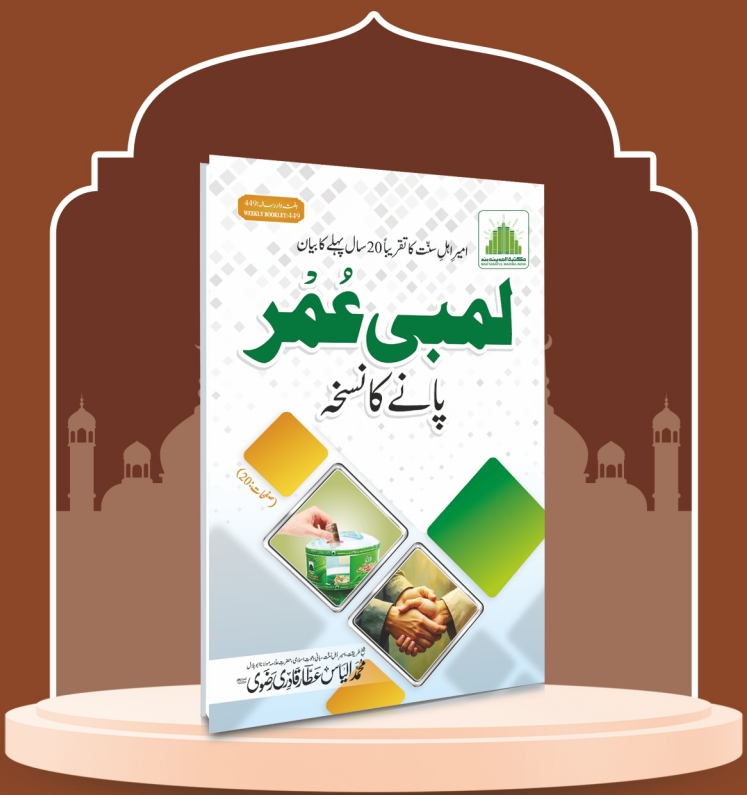


DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ
MAKTABATUL MADINA INDIA

**Delhi :** 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

**Mumbai :** 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

**Ahmedabad :** Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

**Nagpur :** Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025